पुरोवाक्

पुरोवाक्

साहित्य की विधाओं में कविता का अलग महत्व है। कम से कम शब्दों में अभिव्यक्ति को सक्षम बनाने में उसका कोई सानी नहीं। नये-नये अर्थ सन्दर्भों को उद्‌घाटित करने की क्षमता कविता को अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न एक अस्तित्व प्रदान करती है। कविता प्रत्येक युग की सही साक्षी भी है। वह समसामयिक परिवेश के प्रति कवि की प्रतिक्रिया है और उनकी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति भी। संस्कृति और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ कविता का संबन्ध गहरा होता है। इस बिंदू पर कविता सांस्कृतिक कर्म बन जाती है। अतः सांस्कृतिक संकट के इस दौर में कविता का इससे चिंतित होना स्वाभाविक है।

आज भारतीय संस्कृति देशी और विदेशी तौर पर कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रही है। मानवीय मूल्यों पर केन्द्रित भारतीय संस्कृति का विरूपीकरण वर्तमान समय का सबसे बडा संकट है। यह संकट महज भारतीय संस्कृति का ही नहीं बल्कि पूरी मानवता का है। वर्चस्वशाली शक्तियाँ रूप बदलकर तीसरी दुनिया को अपने कब्जे में करने की कोशिश कर रही है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, नव-उपनिवेशीकरण और सांस्कृतिक साम्राज्यवादी के हथियार से लैस इस हमले में भारतीय संस्कृति के स्वत्व भी संकटग्रस्त हो रहा है। साथ ही सांप्रदायिक शक्तियाँ भी आक्रामात्मक रूप धारण करते हुए भारतीय संस्कृति को घायल कर रही है। नतीजतन वह उपभोगवादी और बाज़ारू संस्कृति की गिरफ़्त से मुक्त नहीं है। यह अपसांस्कृतिक अस्तित्व भारतीय संस्कृति को दिशाहीन कर रहा है और भारतीय जनता को भी।

सांस्कृतिक संकट का वर्तमान रूप ज़्यादा खतरेदार है। क्योंकि आज यह सांस्कृतिक हमला परोक्ष रूप में संपन्न हो रहा है। भूमण्डलीय नव-उपनिवेशवाद

भारतीय संस्कृति को विनाश की ओर ले जाने को कटिबद्ध है। आधुनिक बनकर जीने की चाहत से भारतीय युवापीढ़ी, सांस्कृतिक संकट की विपत्ति से अनजान होकर इस चंगुल में फंसते जा रही हैं। सांस्कृतिक संकट के वास्तविक स्वरूप और उसकी गहराई से जनता को सचेत कराने को साहित्य वचनबद्ध है। हिन्दी कविताओं के अध्ययन के दौरान इसमें चिन्हित सांस्कृतिक संकट की गहराई से मेरा परिचय हुआ। इससे संबन्धित अध्ययन की ज़रूरत मुझे महसूस हुई। तदनुसार मैं ने सांस्कृतिक संकट को शोध के लिए चुना। समकालीन कवियों में चन्द्रकान्त देवताले की कवितायें इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। उनकी कविता सांस्कृतिक संकट के परिवेश के प्रति चिंतित है, और साथ ही प्रतिरोध की जरूरत पर ज़ोर देनेवाली भी है। इसीलिए मैं ने चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में लक्षित सांस्कृतिक संकट को शोध के विषय के रूप में लिया। क्योंकि उनकी कवितायें सांस्कृतिक संकट से चिंतित है, और उनमें प्रतिरोध की अनिवार्यता को भी दर्शाया है।

समकालीन हिन्दी कवियों में चन्द्रकान्त देवताले को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी कवितायें समय के साथ, समाज के साथ सरोकार रखनेवाली है। अमानवीय व्यवस्था के प्रति विद्रोह करनेवाला कवि मानव-जीवन के विडम्बनाओं के प्रति चिंतित भी है। शब्दों को चखकर आनेवाला कवि सभी प्रकार के सामाजिक विसंगतियों को अपने ही भीतर महसूस करते हैं। इसलिए वे जन-सामान्य के कवि माने जाते है।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध प्रबन्ध को मैं ने पाँच अध्यायों में विभक्त किया है।

पहला अध्याय 'समकालीन हिन्दी कविता और चन्द्रकान्त देवताले का कवि व्यक्तित्व' है। इसमें 'समकालीनता' पर विचार करते हुए समकालीन कविता की

मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही चन्द्रकान्त देवताले के कवि-व्यक्तित्व को कविताओं के ज़रिए पहचानने का प्रयास भी किया गया है।

दूसरा अध्याय 'भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक संकट' है। इसमें संस्कृति के मूल स्वरूप, और भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सांस्कृतिक संकट की समस्या को समझने और उसकी गहराई को आँकने का प्रयास हुआ है।

'चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में सांस्कृतिक संकट के विभिन्न आयाम' तीसरा अध्याय है। इसमें चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं के ज़रिए सांस्कृतिक संकट के बहुआयामी स्वरूप को परखने की कोशिश की है। अलग-अलग मुखौटों में हमारे सामने उपस्थित सांस्कृतिक संकट की विपत्ती से जूझनेवाली कविताओं का विश्लेषण करने का प्रयास भी किया गया है।

चौथा अध्याय है 'चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में बदलती सांस्कृतिक अस्मिता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य और प्रतिरोध'। सांस्कृतिक अस्मिता विकृत हो जाने से जीवन के हर क्षेत्र में उसका असर पडा है। चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में दर्शित इस अपसांस्कृतिक अस्मिता की असलियत को देखने-परखने की कोशिश इसमें हुआ है। साथ ही कविताओं में उपस्थित प्रतिरोध के विभिन्न आयामों को तलाशने का प्रयास भी यहाँ हुआ है।

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं का संरचनात्मक पक्ष पाँचवाँ अध्याय है। इसमें सांस्कृतिक संकट का प्रक्षेपण के लिए प्रयुक्त भाषा का विवेचन हुआ है। साथ ही भाषा शैली, प्रतीक, बिंब मिथक और फन्तासी का प्रयोग पर भी विचार किया गया है।

उपसंहार में शोध के उपरान्त निकले निष्कर्ष प्रस्तुत है। अंत में संदर्भ व सहायक संदर्भों ग्रन्थों की सूची समाहित है।

इस शोध कार्य को संपन्न करने में कई विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग रहा है। यह शोध कार्य निर्मला कॉलेज मुवाट्टुपुष़ा के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष और सह आचार्य डॉ. सुजा सी के मार्गनिर्देशन में संपन्न हुआ है। उनके प्रोत्साहन, और दिशा-निर्देशन के प्रति मैं सदैव आभारी हूँ। इनके अलावा अन्य कई अध्यापकों से प्रेरणा मिली है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। निर्मला कॉलेज के सभी अध्यापकों के सलाह एवं सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे कई मित्रों के प्रोत्साहन एवं सुझाव के बिना यह प्रबंध समर्पण कतई सम्भव न था। षिन्टू, षीना, अन्जू, श्रीजा, अम्बिली, सुकन्या आदि से मैं अपना प्यार और आभार प्रकट करती हूँ।

शोध कार्य के हर मोड पर प्यार भरे सहयोग और प्रार्थना से मेरे साथ जुडे रहनेवाले मेरे पति, माँ-बाप और भाई से मैं सर्वथा कृतज्ञ हूँ। इस शोध-कार्य को संपन्न कराने में अपने बेटे हरिकेश से मिले सहयोग और उसकी सहिष्णुता को मैं भूल नहीं सकती। उसको भी प्यार और धन्यवाद। डी.टी.पी कर्ता श्री उदयन कलमश्शेरी, प्रूफ संशोधित में मदद करनेवाले अध्यापक बन्धुओं, प्रबंध समर्पण में मदद करनेवाले अन्य सभी मित्रों-बन्धुजनों हितैषियों के प्रति मैं एहसानमन्द हूँ।

सर्वोपरि मैं ईश्वर की कृपा की ऋणी हूँ।

रश्मि एम.एन.